विचार बिन्दु

सच्चा गुरु अनुभव है। –स्वामी विवेकानंद

केजरीवाल का पतन: नई राजनीति के सपने का टूटना

हालांकि अभी यह कहना जल्दबाजी होगी कि आम आदमी पार्टी (आप) के सुप्रीमो अरविन्द केजरीवल राजनीतिक रूप से समाप्त हो गये हैं। दिल्ली विधान सभा चुनावों में केजरीवाल ने एक दशक पहले अपना इक़बाल बुलंद करते हुए कुटिल राजनेताओं द्वारा बिगाड़ दी गई राजनीति से त्रस्त देश के लोगों में लोकहितकारी राजनीति का सपना जगाया था। और अब वहीं के चुनावों में वे बेआबरू होकर निकले हैं। अपनी पार्टी को बहुमत दिला पाने में तो वे असफल रहे ही, खुद भी चुनाव हार गये। अन्ना हजारे के नेतृत्व में 2011 में चले जन लोकपाल आंदोलन को आगे बढ़ाते हुए केजरीवाल ने 2012 में जिस 'आम आदमी पार्टी' की नींव रखी थी उससे जयप्रकाश नारायण के आंदोलन के बाद पहली बार देश में लोगों को ठहरी और घुटी हुई राजनीति में नई बसंती बयार महसूस हुई थी और केजरीवाल नायक के रूप में स्थापित हुए थे। हर तरफ, खास कर पढे-लिखे मध्यम वर्ग को, लगा कि राजनीति में अच्छे लोगों को नया लोकतान्त्रिक मंच उपलब्ध हुआ है, जहां सेवाभावी लोग आ कर आवाम की तकदीर बदल सकते हैं। आजादी के बाद भारत में 'आम आदमी पार्टी' के अलावा एन. टी. रामाराव की 'तेलुगू देशम' पार्टी और प्रफुल्ल कुमार महंता की 'असम गण परिषद' के ऐसी दो पार्टियों के उदाहरण हैं, जो पहले प्रयास में ही सत्ता में आने में कामयाब रही। तेलुगू देशम पार्टी और असम गण परिषद एक राज्य तक सीमित रहीं जबकि आम आदमी पार्टी दिल्ली से बाहर पंजाब में भी सरकार बनाने में कामयाब रही। इसके साथ ही आम आदमी पार्टी कुछ साल पहले राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा हासिल करने में भी कामयाब रही। हालांकि उसने अन्य राज्यों में भी चुनाव लडे मगर और कहीं उसकी बात बनी नहीं। 'आप' से लोगों में एक नई राजनीतिक संस्कृति की आशा जगी की और उन्होंने उसे अपना समर्थन देकर ताकत दी। मगर समय गुजरने के साथ बाद के घटनाक्रमों से ऐसा लगने लगा कि यह पार्टी केवल एक नया ब्रांड बन कर रह गई है जिसका चेहरा सिर्फ केजरीवाल हैं। राजस्व सेवा की अखिल भारतीय प्रशासनिक सेवा छोड कर सभ्य समाज के आंदोलनों से होते हुए राजनीति में आए केजरीवाल के अपने इतने आग्रह रहे कि वे अपने उन नजदीकी लोगों से भी अलग हो गये जो शुरुआती दौर में उत्साह के साथ जी-जान से लगे थे। जब केजरीवाल ने वैगन आर कार में हाफ शर्ट पहने और मफलर लपेटे मुख्यमंत्री के रूप में अपनी पारी शुरू की थी, तो वे आम लोगों से जुड़ रहे थे, तब अनेकों को लगा कि वे एक नई राजनीतिक संस्कृति बना रहे हैं। भारत के लोगों की तरह, विदेशों में भी 'आप' एक आश्चर्यजनक घटना थी। भ्रष्टाचार के खिलाफ किसी नागरिक समाज के आंदोलन का एक राजनीतिक पार्टी में परिवर्तित हो जाना सचमुच एक अनोखी घटना थी। दुनिया भर के अकादमिकों के लिए यह घटना अध्ययन का विषय बनी। सब यह जानना चाहते थे कि ब्यूरोक्रेसी से आया एक एनजीओ पृष्ठभूमि वाला नौसिखिया नेता दिल्ली का मुख्यमंत्री कैसे बन गया?

अरविन्द केजरीवाल तथा उनके सहयोगी मनीष सिसोदिया दोनों ही नागरिक समाज/एनजीओ पृष्ठभूमि से आये थे। सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस), सार्वजनिक कार्यों, सामाजिक कल्याण योजनाओं, आयकर और बिजली से संबंधित नागरिकों की शिकायतों को लेकर दिसंबर 1999 में, केजरीवाल, मनीष सिसोदिया और अन्य लोगों ने दिल्ली में 'परिवर्तन' नामक एक आंदोलन चलाया। यह एक पंजीकृत एनजीओ नहीं था तथा वह व्यक्तिगत चंदे पर चल रहा था। इसके सदस्यों व कर्णधारों ने इसे जन आंदोलन के रूप में सफलता से प्रस्तुत किया। बाद में, 2005 में, केजरीवाल और मनीष सिसोदिया ने 'कबीर' नाम से एक पंजीकृत एनजीओ की शुरुआत की। 'परिवर्तन' की तरह, 'कबीर' भी सूचना के अधिकार (आरटीआई) और सहभागी शासन की स्थापना पर केंद्रित था। हालांकि, 'परिवर्तन' से इतर 'कबीर' एनजीओ के लिए उन्होंने संस्थागत दान स्वीकार किया। 'कबीर' एनजीओ का प्रबंधन मुख्य रूप से सिसोदिया के हाथ में था। शायद यहीं से आप का आंदोलन भटकने लगा और केजरीवाल की व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाएं बढ़ने लगी। हालांकि 2006 में, केजरीवाल को सरकारी भ्रष्टाचार के खिलाफ अभियान में आरटीआई कानून का उपयोग करके 'परिवर्तन' आंदोलन में उनकी भागीदारी के लिए विश्व प्रसिद्ध 'रेमन मैग्सेसे' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्होंने पुरस्कार राशि अपने द्वारा स्थापित 'पब्लिक कॉज रिसर्च फाउंडेशन' कोबीज धन के रूप में दान कर दी।मगर बाद के घटनाक्रमों से यही साबित हुआ कि केजरीवाल कितने चतुर और तेज हैं। उन्होंने अपनी मेधा से आईआईटी करने के बाद टाटा की कंपनी में इंजीनियर की नौकरी की, उसे छोड कर भारतीय प्रशासनिक सेवा की परीक्षा देकर केन्द्रीय राजस्व सेवा के अधिकारी बने। फिर ऊंची सरकारी नौकरी छोड कर लोक सेवा के लिए नागरिक समाज के जन आंदोलनों से जुड़ गये और चमत्कार जैसा दिखाते हुए नई राजनैतिक पार्टी बना कर दिल्ली की विधान सभा पर कब्जा कर लिया। अरविन्द केजरीवाल के जीवन पर निगाह डालें तो हमें उनका एक महत्वाकांक्षी व्यक्तित्व नज़र आता है। अपने पर लगे भ्रष्टाचार के मुकदमों की कानूनी लडाई में आप के शीर्ष नेताओं को लंबे समय तक फंसे रहना पडेगा। इससे आम आदमी पार्टी के भविष्य पर भी सवालिया निशान लगता है।

महात्मा गांधी ने दुनिया में पहली बार राजनीति को पवित्र बनाने की कोशिश की। मगर एक धर्मांध हत्यारे ने बापू को गोली मार कर उनकी इहलीला को ही समाप्त नहीं किया अपितु स्वच्छ राजनीति की संभावना को ही खत्म कर दिया। लोगों को और राजनैतिक समीक्षकों को लगा था कि केजरीवाल 'आप' के प्रयोग के जरिए शायद राजनीति में आई गिरावट से बाहर आने की कोई राह निकलेगी। मगर यह उम्मीद तब तिरोहित हो गई जब केजरी वाल को राज में आने के बाद नये रूप में और आरोपों के घेरे में पाया।

हम आम आदमी पार्टी या अरविंद केजरीवाल के बाद के रूप को उनके पिछले आंदोलन के आईने में देखेंगे तो लगेगा कि ये वो राजनीति तो नहीं है, जिसका उन्होंने वादा किया था। कह सकते हैं कि आंदोलन करना और सरकार चलाना दोनों दो अलग बातें हैं। आंदोलन में किसी से प्रतियोगिता नहीं होती है। किन्तु चुनावी राजनीति के मैदान में प्रतिद्वंद्वी होते हैं। सरकार में आंदोलन वाला व्यवहार नहीं चलता। वहां संवैधानिक सीमाएं होती हैं और प्रशासनिक चुनौतियां होती हैं। ऐसे में आंदोलन करते हुए राजनीति में आए नेताओं को अपने बहुत सारे आदर्श परे रखने पढ़ते हैं क्योंकि लोकतान्त्रिक शासन में संघर्ष के आदर्श अनुपयोगी हो जाते हैं। इसीलिए यह सवाल बार-बार पूछा जाता रहा है कि आम आदमी पार्टी का मोरल फाउंडेशन क्या है? या उसकी विरासत क्या है? जैसे कांग्रेस की राजनीतिक विरासत स्वतंत्रता संग्राम है। गांधी और वल्लभभाई पटेल भी कांग्रेस की विरासत हैं। बीजेपी की राजनीतिक विरासत राम जन्मभूमि आंदोलन है और एंटी इमर्जेंसी आंदोलन है। आम आदमी पार्टी की चार बडी राजनीतिक विरासतें मानी जा सकती हैं। अन्ना हजारे का भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन, अरविंद केजरीवाल की एक्टिविस्ट वाली छवि, कांग्रेस और बीजेपी को एक साथ चुनौती देना, और सुशासन के मुद्दे को भारतीय राजनीति में फिर से केंद्र में लाना। सत्ता में आकर 'आप' ये सारी विरासतें न दिल्ली में आगे बढ़ा पाई और न पडोसी पंजाब में। जनता की निगाह में 'आप' की छवि हमेशा प्रतिरोध की रही। प्रतिरोध की विरासत को लेकर चलते हुए गवर्नेंस की विरासत बनाना संभवत: 'आप' के लिए सबसे बडी बाधा बनी रही है। बहुतों को लगता है कि 'आप' सुशासन की विरासत को आगे नहीं बढ़ा पाई इसलिए उसकी मुश्किलें बढ़ी। 'आप' ने राष्ट्रीय पार्टी बनने के फेर में दिल्ली से निकल कर दूसरे प्रदेशों में जाने की बहुत जल्दबाज़ी दिखाई। हालांकि एक अलग तरह की पार्टी होने की पहचान को राष्ट्रव्यापी स्तर पर भुनाने का लालच छोड़ना केजरीवाल के लिए नामुमकिन था। परंतु लोकतान्त्रिक चुनावी राजनीति के लिए कैडर महत्वपूर्ण होता है। केजरीवाल ने आंदोलनों में जुटने वाली भीड़ में से अपनी पार्टी के लिए कैडर जुटा लेने का दांव खेला जो अंतत: असफल हुआ दिखता है। कैडर पार्टी की विचारधारा से बनता है। 'आप' अपनी कोई विचारधारा नहीं बना पाई। वास्तव में उसके ऐसा कोई प्रयत्न ही नहीं किया। 'आप' किस विचारधारा की राजनीतिक करती है, इस सवाल का जवाब पार्टी ने अपनी वेबसाइट पर ही दिया हुआ है। पार्टी की वेबसाइट पर कहा गया है कि यह पार्टी विचारधारा केंद्रित नहीं बल्कि समाधान मुहैया कराने पर ज़ोर देती है। पार्टी शुरू से ही यह कहती रही कि वह राजनीति का ढर्रा बदलेगी। इसे ही केजरीवाल ने अपनी राजनीति का मॉडल बनाया। मगर बाद के समय में 'आप' भारतीय राजनीति के पुराने ढर्रे में समा गई और लोगों को लगने लगा कि आम आदमी पार्टी जो कहकर आई थी वैसा करने में कामयाब नहीं रही। केजरीवाल की 56 साल की ज़िंदगी में नाकामियां बहुत कम रही हैं। उनको सबसे बडी नाकामी इस बार के दिल्ली विधानसभा चुनाव में मिली जहां वे अपनी खुद की विधानसभा सीट भी नहीं बचा पाए। इस हार के बाद अरविंद केजरीवाल के लिए आगे की राह पर सवालिया निशान जरूर लगगया है। लेकिन केजरीवाल का पतन उस सपने का भी टूट जाना है जो देश की राजनीति को बदलने था। महात्मा गांधी ने दुनिया में पहली बार राजनीति को पवित्र बनाने की कोशिश की। मगर एक धर्मांध हत्यारे ने बापू को गोली मार कर उनकी इहलीला को ही समाप्त नहीं किया अपितु स्वच्छ राजनीति की संभावना को ही खत्म कर दिया। लोगों को और राजनैतिक समीक्षकों को लगा था कि केजरीवाल 'आप' के प्रयोग के जरिए शायद राजनीति में आई गिरावट से बाहर आने की कोई राह निकलेगी। मगर यह उम्मीद तब तिरोहित हो गई जब केजरी वाल को राज में आने के बाद नये रूप में और आरोपों के घेरे में पाया। केजरीवाल, सिसोदिया और 'आप' की हार के साथ दिल्ली का स्वच्छ राजनीति का प्रयोग समाप्त हो गया है। जिन्होंने केजरीवाल तथा उनकी 'आप' पार्टी में जनहित वाली राजनीति का सपना देखा था उन्हें इस तरह के प्रयोग के फिर से होने का कितना इंतजार करना होगा कोई नहीं बता सकता।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

आदि काल से लाइफ मैनेजमेंट के सर्वश्रेष्ठ गुरु भोलेनाथ से जुड़े रोचक रहस्य

डॉ. जे.के. गर्ग

आदि काल से लाइफ मैनेजमेंट के सर्वश्रेष्ठ गुरु भोलेनाथ से जुड़े रोचक रहस्यडा.जे.के. गर्ग

हम सभी आत्म चिंतन करें जब शिवजी के परिवार में विरोधी स्वभाव के प्राणी भी प्रेमपूर्वक साथ-साथ प्रेमपूर्वक रहते हैं तो क्यों नहीं हम हमारे समाज एवं देश में बिना किसी भेदभाव के गिरे हुओं को, पिछड़े हुओं को, विभिन्न धर्मों के अनुयायियों को साथ लेकर चल सकते हैं? यह भी सत्य कि कुछ धर्मांध स्वार्थी पथभ्रष्ट तथाकथित धार्मिक मनुष्य मौका मिलने पर अपने निज स्वार्थ के खातिर समाज में सांप्रदायिक सद्भाव को नष्ट करने के अंदर शामिल हो जाते है । शिव रात्री के पावन पर्व हम सभी सनातन धर्मी भारत वाशी संकल्प ले कि हम समाज के विभिन्न धर्मालंबी लोगों के साथ मिलजुल कर रहेंगे एक दुसरे का सम्मान करके प्रेम पूर्ण समंध बनायेगें। आदि काल के सर्व श्रेस्ट मेनेजमेंट गुरु भोलेनाथ अपने परिवार के अंदर निवास करने वाले विपरीत स्वभाव वाले प्राणी बिच्छू, बैल और सिंह, मयूर एवं सर्प और चूहा जैसे घोर विरोधी स्वभाव के प्राणियों के साथ प्रेमपूर्वक रहते हैं तो हम विभिन्न धर्मों के अनुयायियों हिदू मुसलमान सिख ईसाई फ़ारसी जैन देश वासियों को साथ लेकर क्यों नहीं जीवन व्यापन कर सकते हैं?

सनातन धर्मी फाल्गुन के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी यानी 26 फरवरी 2025 को शिवरात्रि धूमधाम से मनाएंगे । फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को ही शिवरात्रि क्यों मनाई जाती है? जनसाधारण के मन में सवाल उत्पन्न होता है कि क्यों फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को शिवरात्रि का त्योहार मनाया जाता है? धार्मिक मान्यताओं के मुताबिक ऐसा माना जाता है कि सृष्टि की रचना इसी दिन हुई थी। मध्य रात्रि में भगवान शंकर का ब्रह्मा से रुद्र के रूप में अवतरण हुआ था। ईशान संहिता के अनुसार फाल्गुन चतुर्दशी की अद्धर्रात्रि में भगवान शंकर लिंग के रूप में अवतरित हुए। चतुर्दशी तिथि के महानिशीथ काल में महेश्वर के निराकार ब्रह्म स्वरूप प्रतीक शिवलिंग का अविभार्व होने से भी यह तिथि महाशिवरात्रि के नाम से जानी जाती है। इसी दिन, भगवान विष्णु व ब्रह्मा के समक्ष सबसे पहले शिव का अत्यंत प्रकाशवान स्वरूप प्रकट हुआ था। कहा जाता है कि शिवरात्रि के दिन भगवान शिव और आदिशक्ति का विवाह हुआ था। मान्यताओं के अनुसार महाशिवरात्रि के दिन ही समुद्र मंथन के दौरान कालकेतु विष निकला था। भगवान शिव ने संपूर्ण ब्रह्मांड की रक्षा के लिए स्वयं ही सारा विष पी लिया था। इससे उनका गला नीला पड़ गया और तभी से शिवजी को नीलकंठ के नाम से जाना जाता है।

भोले नाथ को सांसारिक होते हुये भी श्मशान का निवासी बोला जाता है इसके पीछे भी लाइफ मैनेजमेंट का महत्वपूर्ण रहस्य छिपा है।

जानिये कैसे? सच्चाई तो यही है कि संसार मोह-माया का प्रतीक है वहीं दुसरी तरफ श्मशान वैराग्य का प्रतीक है। प्रभु शिव कहते हैं कि आदमी को संसार में रहते हुए अपने कर्तव्य पूरे करने चाहिए वहीं साथ-साथ मोह-माया से दूर भी रहना चाहिये। क्योंकि शरीर और संसार दोनों ही नाशवान है। एक न एक दिन यह सब कुछ नष्ट होने वाला है। इसलिए संसार में रहते हुए भी आदमी को किसी से मोह नहीं रखते हुए अपने कर्तव्य पूरे करने के साथ-साथ एक बैरागी की तरह जीना चाहिये।

शिवलिंग मंदिरों में बाहर क्यों होता है ?

निसंदेह भोले नाथ जन साधारण के देवता हैं, इसीलिए भोलेनाथ वहां रहते हैं जहाँ छोटे-बडे, जवान-बुजुर्ग आसानी से पहुंच सके। इसी मान्यता के कारण शिवलिंग को मन्दिरों में बाहर ही स्थापित किया जाता है जिससे बच्चे बूढे जवान जो भी जाए शिवलिंग को छूकर, गले मिल कर या फिर भगवान् के पैरों में पडकर अपना दुखडा सुना कर हल्के हो सकते हैं। इसी वजह से शिवजी अकेले ही वो देव हैं जो गर्भ गृह में भक्तों को दूर से ही दर्शन देते हैं। आईये जाने भोलेनाथ शिवजी की पूजा-अर्चना में बेलपत्र और जल क्यों चढ़ाया जाता है ? निसंदेह बेलपत्र भगवान शिव को बेहद प्रिय है और इसलिए शिवलिंग पर बेलपत्र चढाए बिना शिव की पूजा को पूर्ण नहीं माना जाती है। बेलपत्र में तीन पत्तियां हैं जिसको लेकर कई तरह की धारणाएं विध्यमान हैं। बेलपत्र में तीन पत्तियां को त्रिदेव (सृजन, पालन और विनाश के देव ब्रह्मा, विष्णु और शिव) माना गया है तो कहीं सत्व, रज और तम गुण का परियाचक माना जाता है। ध्यान देने योग्य बात है कि कहीं बेलपत्र में तीन पतियों को तीन आदि ध्वनियां जिनकी सम्मिलित गूंज से ऊं बनता है का प्रतीक माना गया है। बेलपत्र की इन तीन पत्तियों को महादेव त्रिनेत्र और भोलेनाथ के हथियार त्रिशूल का भी प्रतीक माना जाता है। शिवलिंग पर बेलपत्र चढ़ाने से एक पौराणिक कथा भी जुडी हुयी है। समुद्र मंथन के समय जब विष निकला तो भगवान महादेव ने पूरी सृष्टि को बचाने के लिए ही इस विष को पीकर अपने कंठ में धारण कर लिया जिसके के प्रभाव से उनका कंठ नीला हो गया और उनका पूरा शरीर अत्यधिक गर्म हो गया जिसकी वजह से आसपास का वातावरण भी जलने लग। जानने लायक बात है कि बेलपत्र विष के प्रभाव को कम करता है इसलिए सभी देवी देवताओं ने बेलपत्र शिवजी को खिलाना शुरू कर दिया था।

जानिये शिव को महादेव क्यों कहते हैं ?

मनुष्य को बड़ा या महान बनने के लिए त्याग, तपस्या, धीरज, उदारता और सहनशीलता की आवश्यकता होती है। विष को अपने भीतर ही सहेज कर आश्रितों के लिए अमृत देने वाले होने से एवं विरोधों, विषमताओं के मध्य संतुलन रखते हुए अपने विशालकाय परिवार को एक बना रखने की शक्ति रखने वाले शिव ही महादेव हैं।

भांग-धतूरे को भगवान शिवजी पर क्यों चढ़ाया जाता है ?

भोले नाथ को आक, धतूरा, भांग आदि शिव को चढ़ाने की जो परिपाटी है, उसके पीछे यही तथ्य छिपा है कि प्रत्येक वस्तु और व्यक्ति के अंदर अच्छे-बुरे दोनों पहलू होते हैं, इन नशीले और विषाक्त पदार्थों को शिव को अर्पित करने का अर्थ हुआ उनके दूवारा शिव-शुभ (औषधीय गुण) को स्वीकार करना किन्तु उनकी अशुभ-व्यसन प्रवर्ती का त्याग कर देना। लाइफ मैनेजमेंट के अनुसार, भगवान शिव को भांग धतूरा चढ़ाने का अर्थ है अपनी बुराइयों को भगवान को समर्पित करना।

शिवजी केवल मृगछाल ही क्यों धारण करते हैं ? निसंदेह समाज में वो ही व्यक्ति वंदनीय होता हैं जो अपरिठाही हो जिसके जीवन संसार में शांति स्थापित करने के लिए हो। महावीर स्वामी से हजारों साल पहिले भोलेनाथ ने अपरिग्रही बनने का सन्देश देते हुए खुद के शरीर पर मात्र मृगछाल धारण किया क्योंकि केवल मृगछाल धारण करना अपरिग्रह का ही प्रतीक है। अपरिग्रही वो होता है जो आवश्यकता से अधिक मात्रा में धन वस्तुओं का संग्रह नहीं करता है।

देवों के देव महादेव का वाहन नंदी बैल क्यों ? जहाँ बैल को खामोश एवं उत्तम चरित्र समर्पण भाव वाला बताया गया है, वहीं दुसरी तरफ बैल बल और शक्ति का भी प्रतीक है। बैल जब क्रोधित होता है तो सिंह से भी भिड लेता है। सुमेरियन, बेबीलोनिया, असीरि या और सिंधु घाटी की खुदाई में भी बैल की मूर्ति पाई गई संसार की लगभग सभी प्राचीन सभ्यताओं में बैल को महत्व दिया गया है । निसंदेह भारत में भी बैल खेती के लिए हल में जोते जाने वाला एक महत्वपूर्ण पशु रहा है। जिस तरह गायों में कामधेनु को श्रेष्ठ माना जाता है उसी प्रकार बैलों में नंदी श्रेष्ठ है। यही सभी कारण रहे हैं जिसके कारण भगवान शिव ने बैल को अपना वाहन बनाया। पौराणिक कथा अनुसार शिलाद ऋषि ने शिव की तपस्या के बाद नंदी को पुत्र रूप में पाया था। नंदी को उन्होंने वेद आदि समस्त ग्रन्थों का ज्ञान प्रदान किया। एक दिन शिलाद ऋषि के आश्रम में मित्र और वरुण नाम के दो दिव्य संत पधारे और नंदी ने पिता की आज्ञा से उनकी खुब सेवा की जब वे जाने लगे तो उन्होंने ऋषि को तो लंबी उम्र और खुशहाल जीवन का आशीर्वाद दिया लेकिन नंदी को नहीं। तब शिलाद ऋषि ने उनसे पूछा कि उन्होंने नंदी को आशीर्वाद क्यों नहीं दिया? तब संतों ने कहा कि नंदी अल्पायु है। यह सुनकर शिलाद ऋषि चिंतित हो गए। पिता की चिंता को नंदी ने भांप कर पूछा क्या बात है तो पिता ने कहा कि तुम्हारी अल्पायु के बारे में संत कह गए हैं इसीलिए चिंतित हूं। यह सुनकर नंदी हंसने लगा और कहने लगा कि आपने मुझे भगवान शिव की कृपा से पाया है तो मेरी उम्र की रक्षा भी वहीं करेंगे आप क्यों नाहक चिंता करते हैं। इतना कहते ही नंदी भुवन नदी के किनारे शिव की तपस्या करने के लिए चले गए। कठोर तप के बाद शिवजी प्रकट हुए और कहा वरदान मांगों वत्स। तब नंदी के कहा कि मैं जिंदगी भर आपके ही सानिध्य में रहना चाहता हूं। **भगवान शिव की परिक्रमा आधी क्यों की जाती है?** धर्मस्थलों में गर्भग्रह में स्थापित मूर्ति और मजारों की परिक्रमा करने की परंपरा है। यह भी सर्वविदित तथ्य है कि परिक्रमा की दिशा घडी की सुई की तरह दक्षिणावृत होती है। लेकिन यह बेहद रोचक तथ्य है कि अकेले भगवान शिव अथवा शिव लिंग ही ऐसे हैं, जिनकी परिक्रमा पूरी नहीं की जाती। परिक्रमा जहां समाप्त होती है, वहीं से फिर घडी की सुई की विपरीत दिशा में लौटा जाता है। जहां तक भगवान शिव का प्रश्न है तो सब जानते हैं कि उनकी जटा से गंगा का प्रवाह होता है, जो कि अति विशाल है। यह मान कर कि उसे पार नहीं किया जा सकता, परिक्रमा वहीं रोक पर वापस लौट जाते हैं। इसे चंद्राकार परिक्रमा कहा जाता है। इसी प्रकार शिव लिंग पर भी चूंकि विभिन्न प्रकार के अभिषेक किए जाते हैं, जिनका निकास गोमुख से होता है, जिसे कि सोमसूत्र कहा जाता है, उसे उलांघना भी धार्मिक विधि के विपरीत माना जाता है। शास्त्रानुसार सोमसूत्र शक्ति-स्त्रोत है। उसे लांघते समय पैर फैलाने से वीर्य निर्मित और 5 अन्तस्थ वायु के प्रवाह पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। इससे देवदत्त और धनंजय वायु के प्रवाह में रुकावट पैदा हो जाती है, जिससे शरीर और मन पर बुरा असर पडता है। जानकारी ये भी है कि तृण, काष्ठ, पत्ता, पत्थर, ईंट आदि से ढंके हुए सोमसूत्र का उल्लंघन करने से दोष नहीं लगता है।

ऐसी मान्यता है कि सनातन धर्म में परिक्रमा करने का चलन गणेश जी के मां पार्वती की परिक्रमा करने से शुरू हुआ। इससे जुड़ा प्रसंग ये है कि एक बार मां पार्वती ने अपने पुत्रों कार्तिकेय तथा गणेश को सांसारिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए पृथ्वी का एक चक्कर लगा कर आने का आदेश दिया गया। कार्तिकेय अपनी सवारी मोर पर रवाना हुए, लेकिन गणेश अपने वाहन चूहे को देख विचार में पड गए कि वे इस प्रतियोगिता में कैसे प्रथम आएं? उन्होंने एक युक्ति निकाली और मां पार्वती के चक्कर लगाना आरंभ कर दिया। जब कार्तिकेय पृथ्वी का पूरा चक्कर लगा कर लौटे तो देखा कि गणेश वहां पहले से मौजूद हैं तो वे चकित रह गए। इस पर गणेश ने कहा कि मां पार्वती ही संसार हैं। ज्ञान प्राप्ति के लिए उनकी परिक्रमा ही पर्याप्त है, उसके लिए पृथ्वी की परिक्रमा की जरूरत नहीं।

धार्मिक मान्यता के अनुसार केवल शिव जी की आधी परिक्रमा की जाती है, जबकि मां दुर्गा की एक, हनुमानजी व गणेशजी की तीन-तीन, भगवान विष्णु की चार, पीपल के वृक्ष की एक सौ आठ परिक्रमा का विधान है। वैसे सामान्यत: तीन परिक्रमा का चलन है। अब आते हैं इस तथ्य पर कि परिक्रमा आखिर क्यों की जाती है? ऐसी मान्यता है कि पवित्र स्थान, मूर्ति, वृक्ष, पौधा आदि की परिक्रमा से उनके इर्द-गिर्द मौजूद आभा मंडल से सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त होती है। हमारी संस्कृति में मंदिर, नदि, पर्वत, तीर्थ, वृक्ष आदि की परिक्रमा का चलन है। दिलचस्प बात है कि पाणिग्रहण संस्कार में वर-वधू अग्नि की परिक्रमा करते हैं। जरा और गहरे में जाएं तो देखिए, सभी ग्रह सूर्य की परिक्रमा कर रहे हैं और सभी ग्रहों को साथ लेकर हमारा सूर्य महासूर्य की परिक्रमा कर रहा है। इतना ही नहीं, बल्कि सभी ग्रह अपनी धूरि पर भी कर रहे हैं। अर्थात यह केवल मान्यता का मसला नहीं है, बल्कि परिक्रमा या चक्र में ब्रह्मांड का गहरा रहस्य छुपा हुआ है। हर छोटा बडे की परिक्रमा कर रहा है। समय की सूचक घडी में भी सुइयां चक्राकार घूम रही हैं। चक्र ही परिवर्तन व प्रगति का द्योतक है। निष्कर्ष यही कि परिक्रमा से केन्द्र तुष्ट होता है, वहीं से ऊर्जा प्राप्त होती है सही मायने में भगवान शिव की सच्ची पूजा आराधना तभी होगी जब हम उनकी शिक्षाओं को जीवन के अंदर धारण करके मिल जुल कर प्रेमपूर्वक एक परिवार की भार्ती रहगें। ॐ नम: शिवाय, ॐ नम: शिवाय,ॐ नम: शिवाय।

–डॉ. जे. के. गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक कालेज शिक्षा जयपुर

काले सोने के नाम से प्रसिद्ध अफीम की फसल तैयार

भीलवाड़ा। काले सोने के नाम से प्रसिद्ध अफीम की फसल पक कर तैयार हो गई । खेंतो मे चारों ओर अफिम डोडे दिखाई देने लगे है ओर किसान दिन रात रखवाली करने में जूटे हूयें है। जिले के अफीम कास्त क्षेत्र सवाईपुर कस्बे सहित सोपुरा, सालरिया, डसाणिया का खेडा, बड़ला, बनकाखेड़ा, खजीना, होलिरड़ा सहित कई गांवों में इन दिनों अफीम के खेतों में पौधों पर डोडे बनने की प्रक्रिया चल रही हैं । अफीम की पौधों में चीरा लगाने से पहले खेत की मेड पर माताजी की प्रतिमा स्थापना करते हैं । जिसे स्थानीय भाषा में नाणा पूजन कहा जाता है। अफीम काश्तकार बद्रीलाल ने बताया कि खेतों में अफीम के पौधों पर डोडे पकने की प्रक्रिया चल रहे हैं । इसके लिए खेतों में (नाणा) माता जी की पूजा अर्चना की। रविवार व मंगलवार का दिन शुभ होने से इस दिन को शुभ मानते हुए अफीम के खेतों में माताजी की स्थापना की जाती है । इसके बाद पके हुए डोडो पर चीरा लगाया जाता है । अफीम के खेत की मेड पर नाणा (देव स्थान) की पूजा अर्चना करके मुहुर्त के लिए पांच व सात डोडा की पूजा की जाती है ।

फ्लाइंग दलों को प्रशिक्षण दिया

अजमेर (कासं)। राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा 27 फरवरी को प्रात: 10 बजे से दोपहर 12.30 बजे एवं दोपहर 3 बजे से सायं 5.30 बजे तकम दो पारी में एवं 28 फरवरी को सुबह 10 बजे से दोपहर 12.30 बजे तक कुल 57 परीक्षा केन्द्रों पर आयोजित होने वाली रीट भर्ती परीक्षा 2024 के सफल निष्पक्ष एवं सुचितापूर्ण आयोजन के लिए जिला कलक्टर लोक बन्धु की अध्यक्षता में सोमवार को बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में निर्धारित परीक्षा केन्द्रों के फ्लाइंग कम ओएमआर कार्डिनेटर दलों को प्रशिक्षण दिया गया।

स्वच्छ भारत मिशन पर चर्चा

मदनगंज-किशनगढ़ (निस)। नगर परिषद द्वारा शहरी क्षेत्र के स्कूल एवं कोचिंग क्लासों में बच्चों के साथ में स्वच्छ भारत मिशन के तहत चर्चा की गई। आयुक्त सीता वर्मा ने कहा की सभी की नैतिक जिम्मेदारी बनती है की साफ सफाई का ध्यान रखे।

उन्होंने स्कूल और कोचिंग में अध्ययनरत बच्चों को स्वच्छता सर्वेक्षण 2024 व साफ सफाई के बारे में जानकारी देकर जागरूक किया। कहा कि किसी भी तरह का कचरा रोड पर, बाजार में आम रास्ता, सार्वजनिक स्थान, पार्का में नहीं फेके। कचरे को एकत्रित कर ऑटो टिपर में डाले। घर का कचरा सड़क पर डालने के बजाय नगर परिषद के ऑटो टिपर में डालकर आस पडोसी को भी जागरूक करे। पॉलिथीन का उपयोग नहीं करे, सिंगल यूज प्लास्टिक को बंद करना चाहिये। आयुक्त सीता वर्मा ने बाजार में व्यावसायिक प्रतिष्ठानों व दुकानदारों से अपील की हैं कि कचरा रात्रि को ऑटो टिपर में ही डालें। ऑटो टिपर में कचरा डालने की आदत बनाएं। परिषद के कर्मचारी प्रतिदिन रात्रि में दुकानदारों से अपना कचरा ऑटो टिपर में डलवाने हेतु प्रयासरत है। परिषद की टीम में स्वास्थ्य निरीक्षक मुकेश लखन, जमादार चांदमल, राजेश धोल, दिनेश टाक, राहुल लखन, राकेश लखन, चरण दास, बाबूलाल, नाथूलाल आदि उपस्थित रहे।

कुम्भ यात्रा से लौटे यात्रियों का स्वागत किया

अरांई, (निसं)। कस्बे से प्रयागराज महाकुंभ में धार्मिक यात्रा के लिए गया जत्था मंगलवार को अरांई पहुंचा। यहां दल का ठाामीणों ने धार्मिक रीति-रिवाजों सहित परम्परानुसार स्वागत अभिनन्दन किया। दल ने प्रयागराज संगम में स्नान करने के साथ-साथ अयोध्या में श्रीरामलाल के दर्शन किए तथा काशी, चित्रकूट, वृन्दावन, मेंहदीपुर बालाजी, गोर्वधन गिरीराज, मथुरा कृष्ण जन्म-भूमि, प्रेम मंदिर गोकुलधाम, में भगवान के दर्शन कर पुण्य कमाया। कस्बे से 55 श्रद्धालुओं का दल बीते मंगलवार को अरांई से रवाना हुआ था। दल में शामिल वरिष्ठ पत्रकार रामजीवण वैष्णव ने बताया कि धार्मिक यात्रा से जीवन के अविस्मरणीय पल साथ लेकर लौटे है। 144 साल बाद बने शुभ संयोग में महाकुंभ स्नान करने जाना सौभाग्य की बात है। आस्था के सबसे बड़े आयोजन में भाग लेकर सभी ने सकुशल यात्रा सम्पन्न की। माया वैष्णव ने बताया कि कुम्भ स्नान से मन व आत्मा तृप्त हो गई। पुष्पा कंवर ने बताया कि महाकुंभ केवल मनुष्य ही नहीं, पक्षियों व जीव-जंतुओं के कल्याण का भी मार्ग प्रशस्त कर रहा महाआयोजन है। जिसका हिस्सा बनकर वह खुद को सौभाग्यशाली महसूस कर रही है।

गिव अप अभियान में 2824 परिवारों ने स्वेच्छा से हटवाए नाम

अजमेर । खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग राजस्थान द्वारा गिव अप अभियान प्रारम्भ किया गया था। इस अभियान के अन्तर्गत खाद्य सुरक्षा सूची की निष्कासन श्रेणी में सम्मिलित परिवार यथा ऐसे परिवार जिनमें कोई भी एक सदस्य सरकारी, अर्द्धसरकारी एवं स्वायत्तशासी संस्थाओं में नियमित कर्मचारी तथा अधिकारी हैं। एक लाख रुपये वार्षिक से अधिक पेंशन प्राप्त करता हो, जिसके सभी सदस्यों की कुल आय एक लाख रुपये वार्षिक से अधिक हो, निजी चौपहिया वाहन धारक, आयकरदाता हो सम्मिलित है। ऐसे व्यक्तियों को प्रेरित कर खाद्य सुरक्षा सूची से अपना नाम स्वेच्छा से पृथक करवाए जाने के लिए आवेदन करवाया जा रहा है। उललेखनीय है कि अजमेर जिले में अब तक कुल 2824 परिवारों एवं 11 हजार व्यक्तियों के द्वारा गिव अप अभियान के अन्तर्गत आवेदन कर अपना नाम खाद्य सुरक्षा सूची से हटवाया गया है।

राशिफल

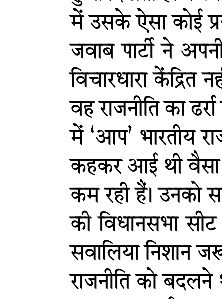

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 26 फरवरी, 2025

फाल्गुन मास, कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2081, श्रवण नक्षत्र सायं 5:23 तक, परिघ योग रात्रि 8:57 तक, वणिज करण दिन 11:09 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 4:37 से कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कुम्भ, चन्द्रमा-मकर, मंगल-मिथुन, बुध-कुम्भ, गुरू-वृष, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज भद्रा दिन 4:09 से रात्रि 10:02 तक रहेगी। आज महाशिवरात्रि व्रत, वैधनाथ जयन्ती, कृत्ति वागेश्वर दर्शन और पूजन, चतुर्दश ज्योतिर्लिंग पूजा है। पंचक रात्रि 4:37 से आरम्भ होंगे।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:44 तक, शुभ 11:14 से 2:40 तक, चर 3:31 से 4:56 तक, लाभ 4:56 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:58, सूर्यास्त 6:22

मेष
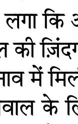
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

वृष

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

कर्क

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

सिंह

स्वास्थ्य में सुधार होगा। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

कन्या

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

तुला
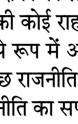
घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

वृश्चिक
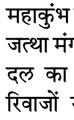
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

धनु
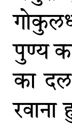
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।

मकर
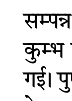
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कुंभ
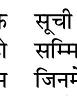
घर-गृहस्थी के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। आज परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन
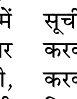
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।